॥ श्री गुरु पिङ्गलाचार्यो जयति ॥

॥ श्री ॥

छन्दःप्रभाकर

अर्थात्

भाषा पिङ्गल, सूत्र और गूढ़ार्थ सहित

जिसमें

छन्दःशास्त्र की विशेष ज्ञानोत्पत्ति के लिये मात्राप्रस्तार, वर्णप्रस्तार, मेरु, मर्कटी, पताका प्रकरण, मात्रिकसम, अर्द्धसम, विषम और वर्णसम, अर्द्धसम और विषम वृत्त प्रकरणों का वर्णन बड़ी विचित्र और सरल रीति से लक्षण और उत्तम उदाहरणों सहित दिया है।

जिसे

साहित्याचार्य्य राय बहादुर **जगन्नाथप्रसाद** (भानु-कवि) असिस्टेन्ट सेट्लमेंट आफिसर पेंशनर (मध्यप्रदेश) ने अत्यंत परिश्रम से रचकर

छन्दःप्रेमी महाशयों के उपकारार्थ

निज यंत्रालय

'जगन्नाथ प्रेस', बिलासपुर में

मुद्रित कर प्रकाशित किया।

छठवींबार २००० प्रति | संवत् १९८३ सन् १९२६ | मूल्य २) रु.